DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

क्रिया

Part -2

LIVE 01-04-2024 09:00 AM

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद- 8

1. संयुक्त क्रिया - जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है। उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

- वह खाने लगा।
- मैंने किताब पढ़ ली।
- माताजी ने प्रसाद बांट दिया।
- वह पेड़ से कूद पड़ा।
- चिड़ियाँ उड़ा करती है।
- वर्षा होने लगी।
- राम सामान को ले जाएगा।
- मुझे पढ़ने दो।

घंटी बज गई।

अर्थ के आधार पर संयुक्त क्रिया के 11 भेद होते है –

i. **आरम्भबोधक** – इससे क्रिया के आरंभ होने का बोध होता है।
जैस – वह बैठे-बैठे सोने लगा। , लक्ष्मण खेलने लगा।

ii. **समाप्ति बोधक** – इससे क्रिया के सम्पन्न होने का बोध होता है।
जैसे – राधा खा चुकी है। , छात्र कक्षा में जा चुके है।

iii. **अवकाश बोधक** – जहाँ कार्य को सम्पन्न करने में अन्तराल (अवकाश) का बोध हो।
जैसे – माला सो न पायी। , लक्ष्मण युद्ध को नही जीत पाया।

iv. **अनुमति बोधक** – इससे कार्य किये जाने की अनुमति दिये जाने का बोध होता है। जैसे – उसे जाने दो। , राधा को बोलने दो।

v. **नित्यता बोधक** – इससे कार्य की निरंतरता का बोध होता है।
जैसे – नदी बहती रहती है। , हवा चल रही है।

vi. **आवश्यकता बोधक** – इससे कार्य की आवश्यकता का बोध होता है।
जैसे – मुझे रविवार को भी विद्यालय जाना पड़ता है।, मोहन को इस काम को जल्दी करना चाहिए।

vii. **निश्चय बोधक** – इससे क्रिया की निश्चयता का बोध होता है।
जैसे – तुम देर करोगे तो मैं चलता बनूँगा। ,

viii. **इच्छा बोधक** – इससे कार्य करने की इच्छा का बोध होता है।

जैसे – अब मैं सोना चाहता हूँ , वह घर जाना चाहता है।

ix. **अभ्यास बोधक** – इससे क्रिया करने के अभ्यास का बोध होता है।

जैसे – वह पढ़ता रहता है। , गणेश खेला करता है।

x. **शक्ति बोधक** – इसस क्रिया करने की शक्ति के भाव का पता चलता है। जैसे- राम चल सकता है। , सीता बोल सकती है। , मैं भी निबंध लिख सकता हूँ।

xi. **पुनरुक्त बोधक** – जब दो समर्थक और समान ध्वनि वाली क्रियाओं का योग बनता है, तब उसे पुनरुक्त बोधक कहते है।

जैसे – राम पढ़ाई लिखाई करता है।

सीता विद्यालय प्रायः आया जाया करती है।

2. नामधातु क्रिया - संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में क्रिया लगाने से नामधातु क्रिया बनती है।

जैसे -

हाथ से हथियाना
शर्म से शर्माना
अपना से अपनाना
गर्म से गर्माना
बात से बतियाना
चिकना से चिकनाना

लाज से लजियाना
झूठ से झुठलाना
लोभ से लुभाना
तोतला से तुतलाना
लाठी से लठियाना
धिक्कार से धिक्कारना

3. प्रेरणार्थक क्रिया - जिन क्रियाओं से यह बोध होता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

ऐसी क्रियाओं के दो कर्ता होते हैं-

प्रेरक कर्ता - प्रेरणा प्रदान करने वाला

प्रेरित कर्ता - प्रेरणा लेने वाला

प्रेरणार्थक क्रिया के दो भेद होते हैं-

प्रथम प्रेरणार्थक - इसमें कर्ता स्वयं भी शामिल होता है।

द्वितीय प्रेरणार्थक - कर्ता स्वयं कार्य नहीं करता

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
उठ	उठाना	उठवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
कट	काटना	कटवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
चल	चलाना	चलवाना
जागना	जगाना	जगवाना

जीतना	जिताना	जितवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
सिल। सीना	सिलाना	सिलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता स्वयं भी कार्य में सम्मिलित होता हुआ कार्य करने की प्रेरणा देता है। उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

- वह सबको भजन सुनाता है।
- माँ बच्चे को खाना खिलाती है।
- महेश बच्चों को रुलाता है।
- गीता बच्चों को हिन्दी पढ़ाती है।
- राम सभी को कविता सुनाता है।
- मोहन बच्चों को पानी पिलाता है।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरों को कार्य करने की प्रेरणा देता है से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

- मोहन गीता से पत्र लिखवाता है।
- मालकिन नौकरानी से बर्तन साफ करवाती है।
- वह अध्यापक से बेटी को गीता पढ़वाता है।
- हम कुली से बोझ उठवाते है।
- महेश नाई से बाल कटवाता है।
- पिता जी अपनी कार मैकेनिक से ठीक करवाते है।

4. पूर्वकालिक क्रिया – जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर दूसरी क्रिया करना प्रारम्भ करता है। तब पहली वाली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

पहले समय में

- राम भोजन करके सो गया।
- मीना रोकर चुप हो गई।
- बच्चा दूध पीते ही सो गया।
- राकेश पढ़कर टी.वी. देखेगा।
- मैं अभी सोकर उठा हूँ।
- वह अख़बार पढ़कर नहाने गया।
- सीमा खेलकर थक गई।

वंदना ने कविता पढ़कर सुनाई।

रेखा सबसे मिलकर अमरावती गई।

5. सहायक क्रिया – सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायता प्रदान करती है।

- मैं घर जाता हूँ।
- वे हँस रहे थे।
- मैं खेल रहा हूँ।
- हम देख रहे थे।
- वह खा चुका था।

6. कृदंत क्रिया – जब मूल धातु ना प्रत्यय को छोड़कर कोई अन्य प्रत्यय प्रयोग हो उसे कृदन्त क्रिया कहते हैं।

- चलेगा – एगा
- खेलेगा – एगा
- दौड़ + कर = दौड़कर
- चले – ए
- चलकर – कर

लिख + ता = लिखता

लिख + कर = लिखकर

दौड़ने

दौड़ता

लिखना

रोना

7. सामान्य क्रिया – जब क्रिया को पूरा करने के लिए सिर्फ एक ही पद की आवश्यकता हो।

- राधा गई
- मोहन चलो
- अमन आया
- रीना नाची

रीटा जागी

विशाल नहाया

अनुपमा भागी

8. सजातीय क्रिया - जब एक ही क्रिया शब्द को दो रूपों में लिखा हो उसे सजातीय क्रिया कहते है।

- वह बहुत अच्छी लिखाई लिख रही है।
- बाबर ने बहुत लड़ाइयाँ लड़ी।
- हमने बहुत ऊँची चढ़ाई चढ़ी।
- भारत ने लड़ाई लड़ी।
- **अनुकरणात्मक क्रिया** – हिनहिनाना, खटखटाना, फड़फडाना, झनझनाना, मिनमिनाना, भिनभिनाना इत्यादि।